English

setuu अध्याय 26

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

जब भगवान राम ने युद्ध जीतने के लिए एक लड़ाई हारी

जब यजमान अशंक के लिए अर्पण की प्रक्रिया संपन्न हुई, हनुमान जी ने उससे प्रसाद में कुछ मांगने के लिए कहा | अशंक , अन्य मातांगो की तरह , उस परम ज्ञान को पाने का इच्छुक था जिससे आत्मा मोक्ष की और अग्रसर होती है | हनुमान जी ने निम्नांकित शब्द कहकर अशंक की आत्मा को आशीर्वाद दिया :

हे मातंगो , जैसे मैंने पहले बताया , युवा राजा दशरथ ने असुरो को हराकर मानवता को एक बहुत बड़े खतरे से बचाया था | लेकिन कुछ असुर उनके साथ अयोध्या के महल में घुस आये थे | उन्होंने देवी कैकेयी और सेविका मंथरा के देह-मन में घोंसला बनाना शुरू कर दिया था | अपराधबोध वह आधार बना जिस पर उन्होंने घोसला बुना | जब राजा दशरथ ने देवी कैकेयी को बताया कि वे माताहीन बचपन के बावजूद बड़े होकर एक भली और आदर्श महिला बनी (उनकी माता को उनके पिता ने निष्काषित कर दिया था), उनमे यह अपराधबोध आ गया कि उन्होंने उस महिला , मंथरा , के लिए कुछ नहीं किया जिसने उनका बचपन से ही माँ की तरह ख्याल रखा |

असुर नकारात्मक भावनाओ के तालाब में उपजते हैं | और 'अपराधबोध' वह नकारात्मक भावना है जो सामान्यतः दयावान और बुद्धिमान लोगो को डुबोती है | जब समाज के दयावान व्यक्ति , अनजाने में , असुरो की कठपुतलियाँ बन जाते हैं तब धर्म पराजित हो जाता है |

मैं आपको समझाना चाहता हूँ कैसे 'अपराधबोध का जाल' अच्छे लोगो को बुरे काम करने पर बाध्य करता है | मैं चाहता हूँ कि आप यह समझो कि कैसे कैकेयी जैसी दयालु तथा बुद्धिमान औरत कल्पना से परे बुरे से बुरा , नीच से नीच काम कर बैठीं | मैं चाहता हूँ कि आप समझो कैसे लाखों भले लोग इस युग में अनजाने में असुरों का कार्य करते हैं |

अपराधबोध तब आता है जब आपने भूतकाल में कुछ गलत किया हो | आप भविष्य में उसकी भरपाई करने की कोशिश करते हैं | तब अपराधबोध आपको काट बैठता है |

मैं आपको कुछ ऐसे लोगो के उदाहरण देता हूँ जिन्हें मैं अभी देख पा रहा हूँ | वे दयालु व्यक्ति थे जब तक कि असुरों ने उन्हें अपराधबोध में नहीं फंसाया था | अब वे अकल्पनीय अधर्म करते हैं |

एक मधुकर है | वह अपने काम में इतना व्यस्त रहा है कि अपने लड़के को बहुत कम समय दे पाया है | अब उसका बेटा किशोरावस्था में हैं | अब भी उसके पास उसके लिए बहुत कम समय रहता है | वह हमेशा से इसके लिए अपराधबोध से ग्रस्त रहा है | इसकी भरपाई करने के लिए वह अपने लड़के की उल जुलूल मांगे पूरी करता आया है | उसके कारण उसका लड़का गलत रास्ते पर चला गया है | वह उसके लड़के की कुछ हरकतों से परिचित है | वह उनको अनदेखा करता रहता है | अर्थात ये पिता-पुत्र दोनों असुरो की गिरफ्त में है |

मधुकर अकेला नहीं है | किसी भी समय पर उसके जैसे हजारो लोग होते हैं | उदाहरंत: महाभारत में धृतराष्ट्र को अपराधबोध था कि वह अपने लड़के को कुछ नहीं दे सका | इस अपराधबोध के चलते उसने अपने बेटे के बुरे कामो का समर्थन करना शुरू कर दिया जो अंततः उन्हें अकल्पनिये

महाविनाश की ओर ले गया |

मैं एक सजेश नामक व्यक्ति को देख सकता हूँ | कुछ सामाजिक संरचनाओ तथा उसकी स्वयं की कुछ गलतियों के कारण वह इस अपराधबोध से ग्रस्त हो गया कि वह अपने माता-पिता के लिए कुछ नहीं कर पाया | उसकी भरपाई करने के लिए वह अपने माता-पिता का असामान्य तौर पर समर्थन करता है | अगर असुरों के प्रभाव में उसके माता-पिता कुछ गलत भी करें तो भी वह उनका समर्थन करता है | इतना दयालु व्यक्ति था वह | अब भी है , बाहर वालों की नजर में | घर के अन्दर वह अपने माता पिता के साथ मिलकर अपनी पत्नी को दुखी रखता है |

एक ओमकार नाम व्यक्ति है | उसका अपराधबोध है कि वह अपनी पत्नी के लिए कुछ नहीं कर पाया है | उसकी भरपाई के लिए वह अपनी पत्नी की हर मांग पूरी करता है और उसकी पत्नी असुरों से ग्रस्त है | अपनी पत्नी की मांग पर उसने अपने माता पिता को घर से निकाल दिया है |

एक दिवाकर नामक व्यक्ति है | उसका अपराधबोध यह है कि उसने पूरी उम्र भौतिक इच्छाओं को पूरा करने में खपा दी और उसने अपनी अध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ नहीं किया | उसकी भरपाई के लिए उसने जोर शोर से गुरु की तलाश शुरू कर दी और गलत गुरु के हत्थे चढ़ गया | अब वह उस तथाकथित गुरु के बहकावे में आकर अधर्म के कार्य करता है |

मैं एक विशेष समुदाय के लोगो को असुरी कार्य करते देख रहा हूँ , हालाँकि उन्हें भ्रम है कि वे अच्छा कार्य कर रहे हैं | ये लोग अपने समुदाय को एक दुसरे समुदाय के शोषण का कारण मानते हैं | उन्हें अपराधबोध है कि शोषित समुदाय के लोगो का शोषण उनके समुदाय ने किया है | तो वे उस शोषित समुदाय के तुष्टिकरण में लगे रहते हैं | अपराधबोध के चलते वे अपने स्वयं के समुदाय को छोड़ चुके हैं , अपने पूर्वजो को गाली देते हैं | तुष्टिकरण इतना बढ़ गया है कि वे उस 'शोषित समुदाय' के गलत कार्यों का भी समर्थन करते हैं |

अपराधबोध से किया गया कोई भी कार्य एक स्वतंत्र आत्मा का कार्य नहीं हो सकता | वह असुर कार्य है | और असुर कार्य किसी समस्या का समाधान नहीं करते बल्कि नई नई समस्या पैदा करते हैं , नये संघर्ष , नई लड़ाइयाँ शुरू करवाते हैं |

देवी कैकेयी को अपराधबोध था कि उन्होंने मंथरा के प्रति कभी कृतज्ञता प्रकट नहीं की , वह मंथरा जिसने उनका बचपन से ख्याल रखा था | उसकी भरपाई के लिए उन्होंने मंथरा के गलत कार्य और गलत विचारों का भी समर्थन करना शुरू कर दिया | जब भी आपको किसी भी प्रकार का अपराधबोध हो , आपको मंथरा , कैकेयी याद आ जाने चाहिए | आपको अपने अपराधबोध को तुरंत ख़तम करना चाहिए |

अगर आप भूतकाल में किसी व्यक्ति के प्रति अच्छे से पेश नहीं आये हैं तो इस क्षण से अच्छे से पेश आने लगिए | लेकिन भूतकाल की भरपाई करने की कोशिश मत कीजिये |

अगर आपको लगता है कि आपका समुदाय किसी दुसरे समुदाय के प्रति कठोरता से पेश आये हैं तो इसी क्षण से आप दुसरे समुदाय के प्रति दयालु बनिए लेकिन भूतकाल की भरपाई करने की कोशिश मत कीजिये |

भूतकाल की भरपाई करने की कोशिश यह बताती है कि आप अपराधबोध से ग्रस्त है | और जहाँ अपराधबोध है , वहां असुर हैं | दीर्घकालीन अपराधबोध के कारण असुर न केवल आपके देह-मन अपितु विवेक और संस्कार पर भी कब्ज़ा कर सकते हैं |

असुरों का एक वर्ग हैं जिसे कपटासुर कहते हैं | जो असुर अयोध्या के महल में घुसे थे और जिन असुरों ने देवी कैकेयी और मंथरा के मन पर कब्ज़ा किया था वे इसी वर्ग के असुर थे | वे आपको दुसरे पहलुओं से अँधा करके लड़ाई करवाते हैं | हालांकि वे दशरथ राजा के महल की शांति को भंग करने में कई साल तक असफल रहे क्योंकि उनके महल के हर व्यक्ति की आत्मा परमात्मा से जुडी थी | देवी कौशल्या ने काल को जीत रखा था और राजा दशरथ ने 'अस्तित्व के द्रव' पर विजय प्राप्त कर रखी थी | इसलिए असुरों को शांति भंग करने में कई साल लग गए |

राजकुमार राम को महल में असुरों की उपस्थिति का अहसास तभी हो गया था जब असुर अपनी पहली करतूत में कामयाब हुए थे | उस दिन कैकेयी एक मंगल समारोह के पश्चात् ब्राह्मणों को भेंट दे रही थी | लगभग सौ ब्राह्मण देवी कैकेयी के घर के केंद्रीय कक्ष में पंक्ति में बैठे थे | कैकेयी सबके पास व्यक्तिगत रूप से आकर मूल्यवान चीजे भेंट कर रही थी |

जब कोई दानी दान देता है तो प्राप्तकर्ता उसे विनम्रता और कृतज्ञता के साथ लेता है | प्राप्तकर्ता का सिर स्वाभाविक रूप से झुक जाता है और वह दोनों हाथों से दान प्राप्त करता है |

एक त्रिजात नामक ब्राह्मण भी उस दिन पंक्ति में मौजूद था | जब देवी कैकेयी उसके पास आई तो उसने अपना सर नहीं झुकाया | उसने दान प्राप्त करने के लिए केवल एक हाथ आगे बढाया , दूसरा हाथ उसने अपने वस्त्रों में छिपाए रखा |

देवी कैकेयी क्रोधित हो गई | उन्होंने उसको क्रोधपूर्वक घूरा और उसे बिना कुछ दिए आगे बढ़ गई | त्रिजात को बहुत बुरा और अपमानित महसूस हुआ | वह महल से इस प्रकार बाहर आया जैसे उसे दान मिल गया हो और कुछ अपमानजनक घटित न हुआ हो | कक्ष में उपस्थित किसी व्यक्ति ने इस ओर ध्यान नहीं दिया सिवाय राजकुमार राम के | राजकुमार राम त्रिजात के पीछे पीछे बाहर आये |

त्रिजात महल के दरवाजे पर पहुंचा जहाँ पर सभी ब्राह्मणों ने अपनी खडाऊ (चप्पल) छोड़ रखे थे | वह अपने खडाऊ खोजने लगा | भगवन राम ने देखा कि वह अपने खडाऊ देखने के लिए भी अपना सिर नहीं झुका पा रहा था | उसकी गर्दन अकड़ी हुई थी | और उसने अपना दूसरा हाथ इसलिए नहीं निकाला था क्योंकि उसके हाथ में भी चोट लगी थी | देवी कैकेयी ने उसकी इस बेबसी को अहंकार समझ लिया था |

भगवान् राम ने उससे कुछ नहीं कहा | वे समारोह कक्ष में लौट आये | त्रिजात को उस दिन इतना अपमान महसूस हुआ कि उसने भविष्य में किसी से कोई दान न लेने का प्रण किया | वह अपनी रोजी रोटी श्रमिक बनकर चलाने लगा | पूरी अयोध्या शहर में वह ऐसे ब्राह्मण के रूप में मशहूर हो गया जो अपने कंधे पर बेलचा लेकर चलता था | किसी को उस घटना का नहीं पता था जिसके कारण उसने दान लेना बंद कर दिया था |

देवी कैकेयी को त्रिजात का पहलु समझ में क्यों नहीं आया? उन्होंने क्यों नहीं सोचा कि त्रिजात की प्रकटतः अशिष्टता के पीछे कोई कारण हो सकता है ? क्योंकि उनका मन कपतासुर वर्ग के असुरों द्वारा संक्रमित था | जैसा मैंने पहले कहा , वे दूसरों के पहलु के प्रति हमें अँधा बना देते है| हम कुछ इस तरह अंधे हो जाते हैं कि दूसरों का दृष्टिकोण नहीं जान पाते | इससे संघर्ष , क्रोध , बदला आदि नकारात्मक भावनाएं उपजती हैं |

कपतासुर हानिरहित प्रतीत होते हैं किन्तु वे किसी के जीवन में अत्यधिक नुक्सान पहुंचा सकते है | आपको पता भी नहीं चलता वे कब आपके मन पर डेरा डाल ले | वे ऐसी चिंगारी लगाते हैं जो बड़ी लडाइयों को भड़काती है | वे एक बार श्री दशरथ के मन में घुस गए थे | उस समय दशरथ युवा थे | तिमिध्वज वाली घटना से बहुत पहले की बात है | उन्होंने तब 10 इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं की थी | वे शक्तिशाली नहीं बने थे | वे बाण चलाने की शब्दभेदी विधा को सीख रहे थे | वे कम तथा शून्य प्रत्यक्षता में बाण चलाना सीख रहे थे | यह तकनीक तब काम आती है जब दुश्मन धुंध अथवा धुएं की आड़ ले और अपने ठिकाने के बारे में भ्रमित करने के लिए अपने आस पास नकली आवाजे पैदा करे |

युवा दशरथ विभिन्न प्रकार की आवाजो को सुनने और शब्दभेदी तकनीक का अभ्यास करने जंगल में जाया करते थे | एक बार उन्होंने तरबूज खा रहे एक हाथी को देखा | तरबूज जब हाथी के मुंह में फूटता है तो एक रोचक आवाज निकलती है | दशरथ ने उस आवाज को याद कर लिया |

तीन दिन बाद वे पुनः जंगल में अभ्यास कर रहे थे | कड़क सर्दी की सुबह थी | धुंध इतनी घनी थी एक हाथ से दूर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था | युवा दशरथ ने एक आवाज सुनी | उनके दिमाग ने तुरंत उस आवाज को 'तरबूज खा रहे हाथी की आवाज' के रूप में पहचान लिया |

उन्होंने कल्पना की कि हाथी २०० मीटर की दूरी पर उनकी ओर मुंह करके खड़ा था | अगर उनका तीर जमीन के सामानांतर आधा फीट की ऊंचाई पर जाता तो जमीन पर पड़े कुछ तरबूजों को भेदते हुए, हाथी के पैरों के बीच से निकल जाता | अपनी तकनीक का अभ्यास करने का अच्छा मौका मालुम हुआ | उन्होंने आवाज के स्त्रोत की तरफ तीर छोड़ दिया | तीर किसी तरबूज में नही बल्कि एक तपस्वी लड़के के दिल में जाकर लगा |

जो आवाज उन्होंने सुनी थी वह किसी तरबूज खाते हुए हाथी की नहीं थी | वह आवाज थी एक खाली खड़ा झील में भरते हुए की | एक मुनि लड़का झील पर अपने बूढ़े माता पिता के लिए पानी लेने आया था |

यह कैसे हुआ? दशरथ, जो जटिल आवाजो को पहचानने का अभ्यास कर रहे थे एक सरल सी आवाज को नहीं पहचान सके? असुर! कपतासुर वर्ग के असुरों ने उनके मन पर कब्ज़ा कर लिया था | ये असुर केवल एक पहलु को दिखाते हैं | किसी अन्य आवाज की सम्भावना के पहलु के प्रति उन्होंने दशरथ को अँधा कर दिया था | हाथी और तरबूजों का विचार इतना शक्तिशाली था कि दशरथ जी एक व्यक्ति के झील से पानी भरने की आवाज के बारे में सोच भी नहीं पाए |

मुनि लड़का उसी स्थान पर मृत्यु को प्राप्त हो गया | अपराधबोध से ग्रसित दशरथ उसके माता पिता के पास पहुंचे और इस दुर्घटना के बारे में उनको बताया | उसके पिता ज्ञानी मुनि थे | उन्होंने दशरथ को क्षमा कर दिया और बोले , 'हमने आपको माफ़ कर दिया है , आप भी अपने आपको माफ़ कर दो | जो होना था हो चूका है |किन्तु अगर अपराधबोध ने आपको जकड लिया तो असुर आपके मन को अपना घर बना लेंगे | वे आपके जीवन में भयानक त्रासदी ला सकते हैं | यह सब आपकी आत्मा ने नहीं किया | वह एक असुर था जिसने आपके देह-मन का प्रयोग करके ये सब किया | और असुर एक बार अगर किसी देह-मन का प्रयोग करके कुछ अधर्म करने में सफल हो जाते हैं , वे उस देह-मन के आस पास मंडराते रहते हैं और अवसर तलाशते रहते हैं फिर से कुछ अधर्म करने का | इसलिए जाओ , अपराधबोधमुक्त होकर |'

इस दुर्घटना के बाद दशरथ जी अध्यात्म सिद्धियाँ प्राप्त करने में जुट गए | वे इंद्र से भी अधिक शक्तिशाली हो गए | असुरो को उनके देह-मन से फिर कोई अधर्म करने का अवसर नहीं मिला |

वह दिन , जिस दिन भगवन राम को वनवास मिला, अलग था | उस दिन असुरों के गुरु शुक्राचार्य ने भगवन राम के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी थी | शुक्र ने कुछ ऐसी चाले चली कि भगवान् राम और दशरथ वह लड़ाई हार गए | हालाँकि वह एक छोटी सी लड़ाई थी जिसमे हार ने आगे आने वाले अंतिम युद्ध में जीत सुनिश्चित की |

राजा दशरथ का राज्य , कोसल, छोटी छोटी प्रशासनिक इकाइयों में बंटा हुआ था जिन्हें जनपद कहा जाता था | जनपदों के शासक सीधे राजा दशरथ के नीचे काम करते थे | जनपदों के अलावा कुछ छोटे राज्य थे जिन्हें आंशिक स्वायतता प्राप्त थी | उन राज्यों के राजा भी महाराज दशरथ जी का आदेश मानते थे | सभी शासक और वे राजा साल में तीन बार राजधानी अयोध्या में मिलते थे |

उस दिन भी वही साल में तीन बार होने वाली बैठक थी | सभी महत्वपूर्ण काम निपटाने के बाद सब शासक आपस में बतिया रहे थे | वे सब खुश थे कि राज्य में कोई समस्या नहीं थी | तभी एक शासक ने सुझाव रखा , 'हे महाराज , राजकुमार राम जनता में बहुत प्रचलित हैं | उनके दयालु स्वभाव , साहसी प्रवृति , दागरहित चरित्र ने राज्य के हर नागरिक का हृदय जीत रखा है |'

महाराज को यह सुनकर बहुत अच्छा लगा | उनके अन्दर का पिता गर्व से फुला नहीं समा रहा था अपने पुत्र की प्रशंसा सुनकर |

मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि सुर (असुरों के विपरीत) तब मानव मन में डेरा डालते हैं जब मन सकारात्मक भावनाओ से ओत प्रोत हो | उसमे कोई हानि नहीं है |जैसे आपने कोई दावत रखी है और आपके रिश्तेदार उसमे शामिल होने आये हैं | सुर उन रिश्तेदारों की भांति हैं | वे कोई नुक्सान नहीं पहुंचाते बल्कि ख़ुशी बढ़ाते हैं |

दशरथ जी वाकई राजकुमार राम की प्रशंसा सुनकर अत्यधिक खुश थे और सुरों ने उस ख़ुशी को उनके देह-मन के जरिये अनुभव किया |

एक अन्य शासक ने विचार रखा | वह बोला – 'हे राजा , क्यों नहीं आप राज्य की जिम्मेदारियां राघव राम को सौंप दे ? उनके शासन में राज्य और भी प्रगति करेगा |

दशरथ भविष्य देख सकते थे | भविष्य देख पाना वह शक्ति है जिसे केवल कभी-कभार और केवल मानवता के कल्याण के लिए उपयोग में लाना चाहिए | इसलिए जिनके पास यह शक्ति होती है वे वर्तमान क्षण में जीते हैं | वे भविष्य को अपने विचारों में नहीं लाते | महाराज दशरथ ने अपनी जिम्मेदारियां छोड़ने के बारे में सोचा भी नहीं था | जब यह विचार उनके मन में आया तो उनके मन ने परम आनंद में गोता लगाया | किसी भी मनुष्य के लिए इससे अधिक प्रसन्नता की बात क्या हो सकती है कि वह अपनी संतान को अपनी विरासत आगे बढाता देखे?

सुरों ने भी इस आनंदातिरेक को महसूस किया | जब सुर आपके मन पर कब्ज़ा कर लेते हैं तो आप असुरों को भी निमंत्रण दे देते हैं क्योंकि आप देह-मन पर नियंत्रण खो देते हैं | कपतासुर वर्ग के असुरों ने महाराज दशरथ के मन पर कब्ज़ा कर लिया |

जैसा कि मैंने बताया ये असुर हमें अन्य पहलुओं के प्रति अँधा कर देते हैं | राजा दशरथ ने कल्पना की कि वे सभी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जायेंगे | उन्होंने कल्पना की कि वे राज्य की बागडोर श्री राम जी के हाथ सौंप देंगे | उन्होंने कल्पना की कि सभी नागरिक खुशियाँ मनाएंगे | लेकिन वे इस तथ्य के प्रति अंधे हो गए कि उनके छोटे पुत्र , भरत और शत्रुघ्न , उस समय अयोध्या में नहीं थे | वे अपने ननिहाल गए हुए थे |

उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा – 'महान विचार है | इस बारे में मैंने पहले क्यों नहीं सोचा? मैं थका हुआ हूँ और वृद्ध हो गया हूँ | मुझे अपनी जिम्मेदारियां राम को सौंप देनी चाहिए | वह निश्चय ही मेरा स्थान लेने योग्य है |'

एक सदस्य ने कहा – 'हे महाराज , हम शासक दूर दूर स्थानों से आये हैं | हमारी अगली बैठक चार महीने बाद है | चार और महीने नष्ट करना उचित नहीं है | अब जबकि हम यहाँ उपस्थित हैं ,क्यों नहीं राम का राज्याभिषेक कल ही कर दिया जाए?'

महाराज इस विचार से सहमत थे | अब भी उन्हें भरत और शत्रुघ्न के अनुपस्थित होने का विचार नहीं आया | जब शासक सभा के एक अन्य सदस्य ने यह बताया कि अगले दिन बहुत अच्छा मुहूर्त है , आनंदातिरेक में झूम रहे दशरथ ने घोषणा कर दी कि राजतिलक उसी मुहूर्त में होगा | उन्होंने अपने प्रधानमंत्री सुमंत्र को कहा कि वे राजकुमार राम को बुलाकर लायें |

जब राजकुमार राम आये तो उन्होंने महाराज के सुरों तथा संभवत: असुरों से प्रभावित होने का आभास हो गया था | सचेत और सजग मन किन्तु विनम्र देह संकेतों से वो महाराज के सामने आये और उन्हें प्रणाम किया | उसके बाद उन्होंने सर झुका और हाथ जोड़कर शासक सभा का अभिवादन किया |

महाराज बोले – 'राम , मेरी मन की इच्छा है कि मैं राज्य की जिम्मेदारियां आपको सौंप दूँ | शासक सभा ने भी यही इच्छा प्रकट की है | क्या इस पर आपकी सहमति है?'

राजकुमार राम ने, जिन्हें असुरों की अनुपस्थिति का अहसास था , राजा के शब्दों को गहराई से परखा और समझा | सभा ने तब तक उनके जवाब का बेसब्री से इन्तजार किया |

'राम,' दशरथ जी चिंतित स्वर में बोले |

राजकुमार राम को महाराज के शब्द असुरो से प्रभावित होने का शक था | इसलिए वे उन शब्दों को मन ही मन दोहरा रहे थे | लेकिन वे उन शब्दों में शैतानी नहीं पहचान सके | शब्द हानिरहित लग रहे थे | इसलिए श्री राम जी ने उत्तर दिया – 'हाँ पिताश्री , निस्संदेह मेरी सहमती है |'

राजा बोले – 'राम , अब आप जा सकते हो |'

राजकुमार राम बैठक सभागार से बाहर आ गए | उन्हें नहीं पता था कि राजा दशरथ अगले दिन ही राजतिलक के योजना बना रहे थे और उन्होंने उसके लिए अपनी सहमती दे दी थी | उन्होंने सोचा कि उनको सिहासन सौपने का विचार शासक सभा में विचार के लिए रखा जा रहा था और राजतिलक चार महीने बाद अर्थात अगली बैठक के दौरान होने वाला था |

अगर दशरथ महाराज कपतासुरों के प्रभाव में न होते तो वे स्व्पष्ट पूछते , 'राम , हम कल ही राजतिलक समारोह रखने की योजना बना रहे हैं , क्या आपकी सहमती है?'

और राजकुमार राम निश्चय ही 'नही' में उत्तर देते क्योंकि उन्हें याद था कि उनके छोटे भाई उस समय समारोह में उपस्थित होने के लिए अयोध्या में नहीं थे |

शुक्राचार्य और उनके असुरों ने बहुत सफाई से अपना खेल खेला था |

राजकुमार राम वापिस अपने घर आ गए | और उस तरफ महाराज ने बैठक संपन्न घोषित कर दी | उद्घोषक ने महल से बाहर आकर बैठक में लिए गए निर्णयों की घोषणा की | अगली सुबह राजकुमार राम के राजतिलक का निर्णय भी सूची में था | यह समाचार आग की तरह फ़ैल गया | नागरिक , जो राम जी को अपने जीवन से भी अधिक चाहते थे , ख़ुशी से झूम उठे |

जब राम जी को यह पता चला तो उन्हें असुरो के षड़यंत्र का अहसास हुआ | वे जो हुआ उसे ठीक करने के लिए अपने पिता को मिलने घर से निकले | दरवाजे पर प्रधान मंत्री सुमंत्र मिले |

सुमंत्र उन्हें बुलाने ही आये थे | राजा दशरथ ने उन्हें बुलाया था जो बैठक सभागार में अपने खास मंत्रियों के साथ राजतिलक की तैयारियों के बारे में चर्चा कर रहे थे |

जब राजकुमार राम वहां पहुंचे महाराज ने मंत्रियों को बाहर जाने का आदेश दिया | जब सब बाहर चले गए , महाराज बोले – 'राम , जब मैंने आपकी सहमती मांगी तब आप कुछ पल के लिए झिझके | क्या कुछ गलत हो रहा है?'

महाराज और राम जी ने देखा कि महाराज की आवाज कक्ष में गूंज रही थी क्योंकि इतने बड़े कक्ष में केवल वे दोनों उपस्थित थे | राजकुमार राम जानते थे कि महाराज का मन अब भी असुर प्रभावित था | उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया | उन्होंने अपने पिता की आँखों में गहराई से झाँका ताकि वे असुरों द्वारा बनाये गए अवरोध को पार करके उनकी आत्मा तक पहुँच सकते |

वे शांति से वहां खड़े रहे , पिता तथा पुत्र , कई देर तक | अंततः दशरथ महाराज की आत्मा जागी और असुरों को डेरा छोड़ना पड़ा | उन्हें असुरों द्वारा किये गए षडयंत्र का अहसास हुआ | अब वे पुनः शक्तिशाली दशरथ थे जो इंद्र तक को हराने की क्षमता रखते थे |

हे मातांगो , जब भी मैं समय में पीछे जाकर यह दृश्य देखता हूँ तो मुझे एक दैवीय दृश्य दिखाई देता है | जब महाराज दशरथ की आत्मा जागती है , उनकी देह प्रकाश की देह में बदल जाती है | और मैं प्रभु राम को उनके दैवीय स्वरुप अर्थात भगवन विष्णु के रूप में देखता हूँ | मैं वहां पिता – पुत्र

अथवा राजा – राजकुमार को नहीं देखता हूँ | मैं देखता हूँ भगवन विष्णु और एक महान आत्मा को आपस में बिना शब्दों के बात करते हुए | वह बातचीत शब्दों में तो मैं नहीं वर्णित कर सकता लेकिन मुझे यह समझ में आता है कि महाराज दशरथ की महान आत्मा के सामने दो रास्ते थे :

1. वे राजतिलक समारोह को रद्द नहीं करते हैं | इससे देवी कैकेयी के असुर संक्रमित मन में असुरक्षा और गलतफहमियां पैदा हो जाती है | वे राम के वनवास का वरदान मांगती हैं | राम जी , जिनका अवतरण असुरों के बल को ध्वस्त करने के लिए हुआ था , राज्यरहित और सेनारहित हो जाते हैं |

1. वे समारोह को रद्द कर देते हैं यह कहकर कि राम ने अपनी सहमती वापिस ले ली है | इससे नागरिकों का राम जी के प्रति विश्वास हिल जाता है | उनके मन में प्रश्न उठते है : पुरुषोत्तम श्री राम , जो एक नजर में यह बता देते हैं कि क्या धर्म है और क्या अधर्म , वे इस अनिर्णय की स्थिति में क्यों हैं कि उन्होंने पहले राजतिलक की सहमती दे दी और उसके बाद वापिस ले ली? सीधे सादे लोग यह नहीं समझ पायेंगे कि राम जी ने तो सहमती दी ही नहीं थी | बैठक के निर्णयों का जो ब्यौरा उद्घोषक ने महल के बाहर सुनाया था उसमे साफ़ बोला गया था – 'राजकुमार राम को बैठक में बुलाया गया और उन्होंने राजतिलक पर सहमती प्रदान की'| विभिन्न जनपदों के शासक जो बैठक में उपस्थित थे वे इस बात के साक्षी थे |

नागरिको के मन में अपने प्रिये राम के बारे में तनिक भी संदेह पैदा होता तो उस संदेह को भय , असुरक्षा आदि अनेक नकारात्मक भावनाओ में बदलने के लिए असुरों की सेना तैयार बैठी थी |

पहले रास्ते से भगवन राम का राज्य से निष्कासन होता लेकिन दुसरे रास्ते से वे नागरिको के दिलो से निष्कासित हो जाते | पहला रास्ता केवल शाही परिवार में संघर्ष पैदा करता किन्तु दूसरा रास्ता राज्य के हर घर में संघर्ष पैदा कर देता |

पहले रास्ते से असुरों का लंका से शासन समाप्त हो जाता और दुसरे रास्ते से असुरों का लंका के अलावा कोसल राज्य पर भी शासन हो जाता |

उन मौन के क्षणों में जब वे बैठक कक्ष में अकेले थे , भगवन विष्णु ने महाराज दशरथ की आत्मा को निर्देश दे दिया था कि क्या करना है | भगवन राम ने असुरों के खिलाफ बड़ा युद्ध जीतने के लिए छोटी लड़ाई हारने का निर्णय ले लिया था |

जब बैठक कक्ष में दिव्य बातचीत चल रही थी , देवी कैकेयी के घर में असुरी बातचीत चल रही थी | मंथरा ने कैकेयी को शहर में फूट रहे हर्षोल्लास का कारण बता दिया था |

देवी कैकेयी, जो एक बुद्धिमान और दयालु महिला थी किन्तु असुरों के प्रभाव में थी , ने शुरू में राम जी के राजतिलक पर ख़ुशी जताई |

फिर मंथरा बोली – 'आगे आने वाली सदियों में लोग जब भी इक्ष्वाकु वंश की चर्चा करेंगे तब वे राम और कौशल्या का नाम तो लेंगे लेकिन भरत को लोग उनके मृत्यु के 14 दिन के अन्दर भूल जायेंगे | क्योंकि यही इस संसार का नियम है | जब पूर्णिमा का चाँद निकलता है , सब उसकी प्रशंसा करते हैं लेकिन 14 दिन में चाँद ख़त्म हो जाता है | उसी तरह जब किसी की प्राकृतिक मौत होती है तो 12 दिन और असामयिक मौत होती है तो 13 दिन याद करते हैं | चौदहवे दिन जीवन फिर सामान्य हो जाता है | हे कैकेयी , क्या आपको दिखाई नहीं दे रहा कि यह राजा दशरथ का षडयंत्र है आपको और आपकी संतान को मिटटी मिलाने का | अन्यथा वह आपके पुत्र को अयोध्या से परे भेजकर पीछे से राम का राज्याभिषेक क्यों करते? यह षड़यंत्र है आपके और आपके पुत्र के खिलाफ |'

चूँकि देवी कैकेयी कपतासुरों के प्रभाव में थी , उन्होंने इस षड़यंत्र की परिकल्पना को सहज ही स्वीकार कर लिया | अगर वे स्वतंत्र आत्मा होती तो वे इस घटना के अन्य पहलुओं पर भी गौर करती | वे इस सम्भावना पर भी विचार करती कि षड़यंत्र नहीं संयोग था | राजा दशरथ ने राजतिलक का समारोह इसलिए रख लिया था क्योंकि विभिन्न जनपदों के शासक इकठ्ठा थे |

देवी कैकेयी ने महाराज के प्रति विश्वास खो दिया | जब आप किसी के प्रति विश्वास खो देते हैं तो आपकी उनके साथ बिताई यादे भी रंग बदल लेती हैं | उनके भूतकाल की बाते भी षड़यंत्र का हिस्सा मालुम पड़ती हैं |

जब महाराज दशरथ कैकेयी के घर में आये तो वे एक नयी कैकेयी से मिले : एक क्रोधित और क्षुब्ध और आहत महिला | जब उनकी आत्मा भगवान् विष्णु की आत्मा के साथ मौन संवाद कर रही थी तभी उनको यह दिखाई दे गया था | उन्हें भविष्य दिख गया था | इसलिए उन्होंने वही भूमिका निभाई जो उनसे अपेक्षित थी | उन्होंने उस पिता की भूमिका निभाई जिनके पुत्र को जंगल में निष्काषित किया जा रहा था |

अतः भगवन राम ने नागरिको को असुरों की सेना से संक्रमित होने से बचा लिया | उन्होंने राज्य त्याग दिया किन्तु नागरिको का हृदय नहीं |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़े हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous

Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print